विश्व रंग़मंच दिवस, 27 मार्च, 2025 के मौ़के पर विशेष प्रस्तुति

कथक नृत्य, साजिंदों की सांगीतिक जुगलबंदी और तरन्नुम से मिर्ज़ा ग़ालिब की तंज–ओ–रंज से भीगी–भीगी शाइरियों की करिश्माई पेशकश से थियेटर ऑर्ट को नई ख्याति दिलाने में रेल इंजीनियर सुधांशु मणि आला–अव्वल हुए....!

(हैदराबाद से सुरेंद्र वर्मा, डॉ. शगुफ़्ता परवीन)

विश्व रंगमंच दिवस मनाए जाने के मकसदों के लब्बोलुआबों को याद करने के अलावा गुज़िश्ता दिनों में हैदराबाद के माधोपुर स्थित शिल्पकला वेदिका के रंगमंच में संपन्न एक बेहद ही खुशनुमा आयोजन का तफसील से बयान पेश करना भी आज का मक़सद है। नज़ाकत और लज़ीज खानपान के ज़ायकों के लिए मशहूर लखनऊ निज़ाम के बाशिंदे सुधांशु मणि के बारे में प्रोग्राम के मंच संचालक ने रेल इंजीनियर मणि साहब के दो ख्वाईशों का जिक्र करते हुए बताया कि देश को ''वंदे–भारत रेल एक्सप्रेस'' देकर उन्होंने अपने रिटायरमेंट के पहले की पहली ख्वाईश को पूरी की है, तो दूसरी ख्वाईश गालिब साहब की नज्मों, गज़लों, और शाईरियों पर कथक की परफार्मेश कराना। यह कहना सही है कि मिर्जा असद–उल्लाह–बेग यानि ग़ालिब ''शायर ही नहीं बल्कि एक इंस्टीट्यूशन थे और आज का प्रोग्राम एक डेडीकेशन है एक ऐसे शायर के नाम, एक ऐसे अदब सितारे के नाम जिन्हें हम मिर्ज़ा ग़ालिब के नाम से जानते हैं। कोई भी

फनकार अगर अपनी उम्र पूरी करने के बाद अगर दुनियां में जिंदा रहता है, लोगों के जेहन में जिंदा रहता है इसका एक ही वजह है उनका काम और गालिब साहब के पास ऐसा काम बहुत है कि वे सालों साल सदियों तक याद किए जाएंगे इसके अलावा इसकी एक और भी वजह और वो है, उनका माद्दा यानि उनके प्रशंसक और उनके फैन्स। जितना ज्यादा उनके फैन्स उनको याद करते हैं, उनको जिंदा रखने में मदद करते हैं गालिब के साथ एकदम सच है कि उनके बहोत सारे फैन्स गालिब को जिंदा रखे हुए हैं और ऐसे ही एक फैन हैं उनके एक माद्दा हैं, सुधांशु मणि साहब। इन्होनें 2014–15 से रिसर्च करना शुरू की थी कि रिटायरमेंट के बाद जो कुछ काम उन्हें करने है उनमें से एक काम ये करना है कि गालिब की गजलों पर कथक की परफारमेंस कराना। अपने इस ड्रीम प्रोजेक्ट को मूर्त रूप देने की खातिर सुधांशु मणि जी ने एक टीम बनाई और टीम में बहुत ही नामचीन काबिल लोंगो को सलेक्ट किया। सैयद कबीर अहमद साहब जो कि इत्तेफाक से रेल्वे मे मणि साहब के सीनियर रहे हैं, रिटायर आफिसर हैं, खुद भी अच्छे लेखक हैं, उन्होने स्क्रिप्ट लिखने का काम किया, गोपाल सिन्हा जो कि एक जाना माना नाम है लखनऊ में, यहां पर जो लाईट एंड साउंड का अरेंजमेंट है उनका मैनेजमेंट है गालिब साहब की गजलों को गाना आसान नहीं है, वो अपनी खूबसूरत सी मधुर सी आवाज में डॉ. प्रभा श्रीवास्तव जी, जो कि बहुत ही मशहूर गजल गायिका हैं, उनकी की आवाज में आप गालिब साहब की गजलें सुनेगें और डॉ. कुमकुम घर जो कि लखनऊ के लिए बहुत ही जाना माना उनके डायरेक्शन में जो नृत्य की इमीजीनेशन की गई जो काबिल–ए–तारीफ़ है। कथक परपंरा है, वो नृत्य की ऐसी षैली है, जो आम तौर पर पौराणिक गाथाओं यानि की ऐथिक्स पर बेस्ड होती है जिस पर श्रीराम जी, श्री कृष्ण जी या कुछ ऐसे ऐतिहासिक करेक्टर के ऊपर कहानियाँ होती हैं और उन पर ये नृत्य होता है तो जब सुधांशु मणि साहब ने सोचा होगा कि गालिब की गजलों पर नृत्य किया जावेगा तो ये आसान नहीं रहा होगा। गालिब की गजलों को अगर आप देखें तो कथम की परंपरा से बिलकुल उलट है ज्यादातर उनका जो काम है वो प्रोगेसिव शैली का उनका एक शेर है कि ''हमको ये मालूम जन्नत की हकीकत लेकिन दिल को खुश रखने गालिब ये ख्याल अच्छा है'' बहुत ही प्रोगेसिव शेर है। लेकिन आप जरा सोचे कि इसके आशार पर नृत्य संभव है? गालिब ने मुहब्बत भी लिखी है, गालिब की मुहब्बत के आषार में एक तंज देखने को मिलता है उनका एक शेर है ''इश्क ने ग़ालिब निकम्मा कर दिया, वरना हम भी आदमी थे काम के'' जब जो मोहब्बत करता है वो अपने आप को निकम्मा कहता है यानि ये एक तंज है तो ऐसी शायरी पर नृत्य की परिकल्पना करना उसको एक्ज्यूक्यूट करना एक बहुत बडा चेलेंज था लेकिन लंबी मेहनत के बाद एक ऐसा प्रोग्राम तैयार भी हुआ। लखनऊ और हैदराबाद में प्रशंसनीय दर्शकों के सामने बेहतरीन शो भी हुआ और अब आप जानेगें कि कितनी मेहनत से किसी कांसेप्ट को एक्ज्यूक्यूट किया जा सकता है। इस प्रोग्राम में गालिब भी नजर आये एक नही दो–दो गालिब नजर आये। सुधांशु मणि ने रंगमंचीय भावना का एक स्पर्श जोड़ते हुए वही तुर्की टोपी, कुर्ता, पायजामा, और मखमली काफ़्तान पहने हुए व हाथ में नक्काशीदार छड़ी थामे सुधांशु मणि और सैयद कबीर अहमद जब महान शायर ग़ालिब के प्रतिरूप बनकर स्टेज पर दिखाई दिये तो दर्शकों की खुशी और आल्हाद की अभिव्यक्ति के लिए लिखने के लिए कोई शब्द ही नहीं मिल रहे। सुधांशु मणि की खनखनाती लहजे में ''ना नूरे ये नगमा हों ना पर्दा ऐ साज, मैं हूं अपनी शिकस्त की आवाज''। आज वही आवाज तारीख के पन्नों के बीच और वक्त के परदे के पीछे से आप तक पहुंचाने जा रहा हूँ। मैंने अपने दोस्तों और खैरख्वाहों को वो जो खत लिख छोड़ थे आज उन्हीं खतों के कुछ हिस्सों के जरिए और अपनी कुछ गजलों की मदद से मैं अपने नुराने ख्याल आपकी खिदमत में पेश कर रहा हूँ। मुलाहिजा....! गालिब कौन है...गालिब कौन हैं ग़ालिब... पूछते हैं, लोगों के ग़ालिब कौन है, कोई बतलाओ कि हम बतलाएं ग़ालिब कौन है। होगा कोई ऐसा जो ग़ालिब को ना जाने? शायर तो अच्छा है, पर बदनाम बहोत है। लखनऊ की मशहूर ग़ज़ल ग़ायिका डॉ. प्रभा श्रीवास्तव ने इन्हीं गज़लों को बेजोड़ पूर्णता के साथ राग मिश्रित ख़माज और ताल खेरवा, ताल–दादरा, राग–बहार, में ''बाजीजा–ए–अफताल, दुनियाँ मेरे आगे होता है, शब–ओ–रोज तमाशा मेरे आगे होता है निरां गर्त में सेहरा मेरा आगे'', दिल–ए–नादान, ''हजारों ख्वाईशें ऐसी कि हर ख्वाईश पे दम निकले, बहोत निकले मेरे अरमान लेकिन फिर भी कम निकले'', सहित बेशुमार गजलों की धुनों और नृत्यों की भाव–भंगिमा के साथ अविस्मरणीय प्रस्तुति देकर ग़ालिब की

गज़लों को नई ख्याति के मुकाम देने में कोई कसर नही छोड़ी। प्रसिद्ध कथक प्रतिपादक डॉ. कुमकुम धर की शार्गिदी में निपुण हुई कथक नृत्यांगना अदिती थपलियात, रोशनी अनुश्रिता घोष, रंजना शर्मा, पार्थवी रॉय, शिवांगी बरवाल, और मिशा सिंह की नृत्य शैली ने ग़जलों को घुघरूओं की छुन–छुन में बदलने वास्ते अपनी पूरी ऊर्जा खपा कर पूरे कार्यक्रम को श्रृंगारित किया। साजिंदो में जीशान अब्बास सारंगी और गायन में, तबले पर नितेश भारती, हारमोरिनयम और सहायक गायन में नमन सिंह, सिथेंसाईजर में रिंकू राज की महारत ने दर्शकों और नृत्यांगनाओं को झूमा का बेहाल करने का रिकॉर्ड कायम किया। इस तरह थियेटर ऑर्ट में सुधांशु मणि और उनके टीम के काबिल शख्सियतों का सबसे बडा सपना, एक तमाशा, ग़ालिब की ग़जलों और अल्फ़ाजों को गायन, वर्णन, प्रस्तुतीकरण, संगीत और कथक नृत्य की शिरणी कलेवर का स्वाद और ज़ायका मौजूद दर्शकों को इस बेहतरीन पेशकश को याद दिलाता रहेगा। इस फीचर आर्टिकल को तैयार करने में श्री सुधांशु मणि, श्री रितेश कुमार त्यागी सहित दर्शक दीर्घा में मौजूद कच्चीबाउली स्थित मॉय होम विहंगा के रहवासी श्रीमति गरिमा राठी, सोनम अरोरा, दिव्या बाजपेई, सृष्टि त्रिपाठी एवं स्कूली स्टुडेंट आमिया राठी की खास भूमिका रही।